हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277 - 9264
यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका (क्रमांक-120)

संकल्य

51 वर्षों से
निरंतर दक्षिण से
प्रकाशित

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

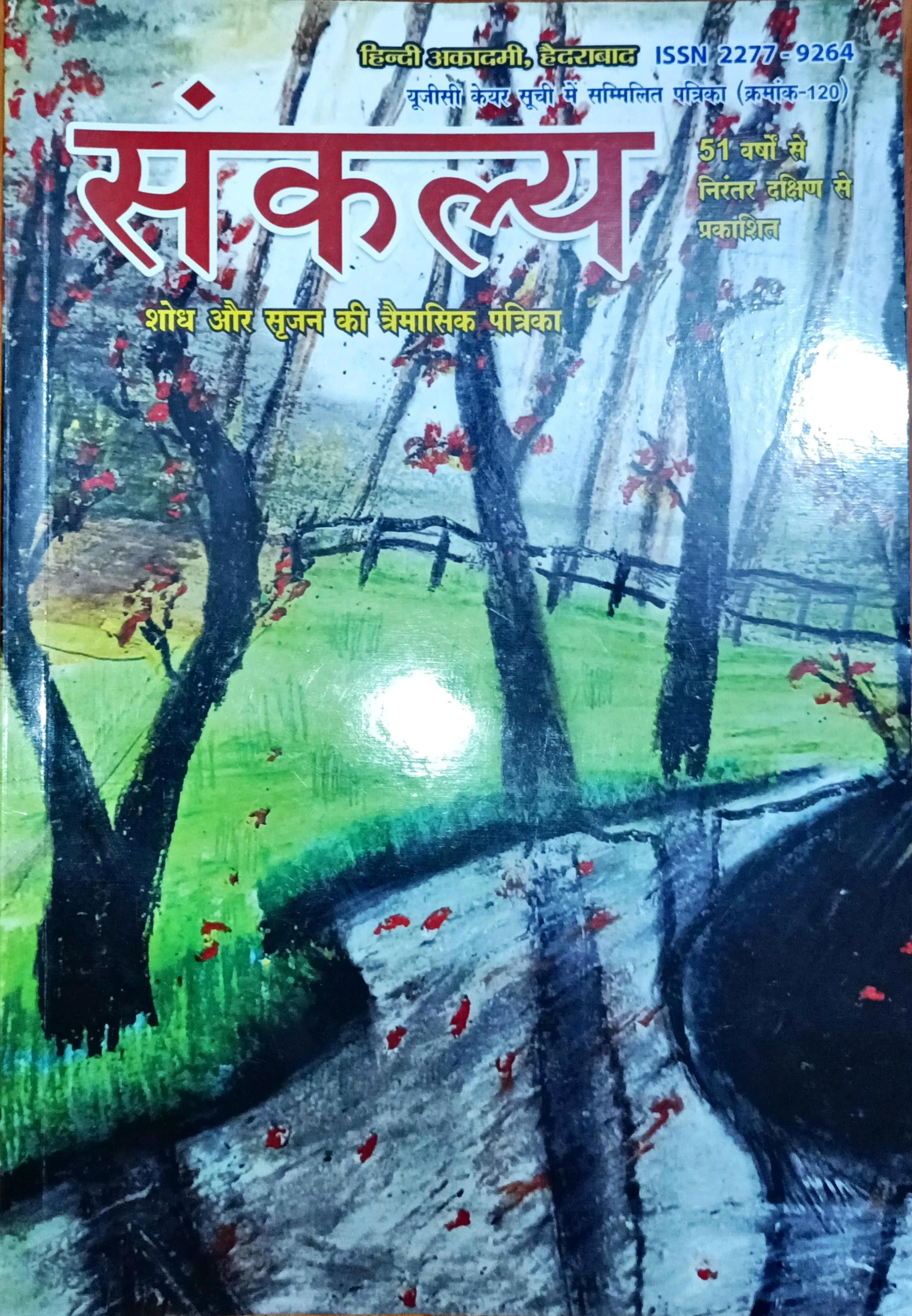

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 51 : अंक–4, अक्टूबर–दिसंबर, 2023

अनुक्रम Contents

संपादकीय

नई शिक्षा नीति और हिंदी : प्रो. आर. एस. सर्राजु 05

साक्षात्कार

डॉक्टर मोहन गुप्ता के साथ डॉ. शशिकांत मिश्र की बातचीत 06

कविता

1. ओम धीरज की दो कविताएँ 09
2. संतोष कुमार झा की दो कविताएँ : 10
3. हाँ तुम भूल ही तो जाते हो : ज्योति मिश्रा 11

आलेख

4. भारतीय साहित्य की परिकल्पना और अनुवाद : प्रो. प्रदीप के. शर्मा 12
5. जम्मू–कश्मीर का सामाजिक व सांस्कृतिक वैविध्य : डॉ. रत्नेश कुमार यादव शाश्वत आनंद 16
6. कृषक जीवन की व्यथा–कथा 'अधबुनी रस्सी एक परिकथा' : प्रो. अखिलेश कुमार शंखधर 20
7. स्त्री–चित्त के बहाने कबीर के काव्य का अवलोकन : प्रो. चंद्रकांत सिंह 24
8. हिंदी उपन्यास : सांस्कृतिक संदर्भ (आदिवासी जीवन केंद्रित हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में) : प्रो. श्यामराव राठोड़ 30
9. समकालीन कविता और यथार्थ : प्रो. भारत भूषण प्रभाकर कुमार 37
10. मुंबइया हिंदी और मुंबई परिवेश से संबंधित समकालीन हिंदी उपन्यास : प्रो. सदानंद भोसले जाधव पोपट यशवंत 43
11. सामाजिक परिदृश्य का यथार्थ : डॉ. सिन्धु जी नायर 49
12. भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव : एक अवलोकन : डॉ. सोनिया एस. 55
13. साहित्य के परिप्रेक्ष्य में कालबोध और सौंदर्यबोधात्मक काल : डॉ. अमिय कुमार साहु 58
14. रामधारी सिंह दिनकर : बहुआयामी लेखक : प्रो. अर्चना झा 62
15. उषा प्रियवंदा की कहानियों में आधुनिक भावबोध : डॉ.विजय हिंदुराव पाटील 66

स्त्री–चित्त के बहाने कबीर के काव्य का अवलोकन

प्रो. चंद्रकांत सिंह

शोध सार : कबीर का काव्य जीवन–विवेक का काव्य है, समाज में जीवन जीने वाले मनुष्य को कबीर प्रेरणा भी देते हैं और नैतिक समाधान भी जिससे कि जीवन सुंदर हो सके। मानव मात्र की बेहतरी और रक्षा का भाव उनकी कविता में है यही कारण है कि सभी प्रकार के सम्प्रदायों को स्वयं में आत्मसात करती हुई उनकी कविता आगे बढ़ती है। यहाँ किसी के लिए भी क्लेश नहीं है, न ही मनोमालिन्य। इस भावधारा से जुड़कर सभी का कल्याण होता है और सभी के मनोरथ सिद्ध होते हैं। कबीर की कविताओं में प्रेम, समर्पण, भक्ति एवं तदाकारिता के भाव यदि निकाल दिए जाएँ तो इन कविताओं का पाठ संभव न हो सकेगा। यह स्त्री–चित्त ही है जो कबीर को शक्ति भी देता है और सामर्थ्य भी जिससे कबीर की कविता सर्वांग मनुष्य के निर्माण की कविता बनती है जहाँ वृहत्तर मानुष–बोध के निर्माण की बात अहम है।

बीज शब्द : प्रेम, समर्पण, भक्ति, सामर्थ्य, संवेदना, मनोभूमि, द्वंद्वों, विषमता

मूल आलेख : कबीर भक्तिकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के द्वारा समाज को जागृत करने के साथ भाव–प्रवण ढंग से मनुष्य को समृद्ध किया है। कबीर की कविताओं में योग–साधना की विभिन्न अवस्थाओं के साथ कोमल संवेदनात्मक मनोभूमि का भी साक्षात्कार होता है। समाज की विभीषिका एवं जड़ता को समूल विनष्ट कर कबीर दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते हैं। उन्होंने अंधकार से भरे हुए समाज को दिशा प्रदान की, साथ ही अपनी भाव–उष्मा से भक्ति का नया मार्ग दिया जो उनका महत्वपूर्ण अवदान है। कबीर जहाँ भक्ति की कोमल अनुभूतियों की बात करते हैं स्त्री संदर्भित प्रतीकों का प्रयोग अनायास ही होता है। एक तरह से कह लें कि उनकी कविता को स्त्री प्रतीकों से ही मुकम्मल रूप मिलता है। उनके काव्य को ज्ञान–भक्ति, बुद्धि–हृदय, तर्क–प्रेम का सुंदर निदर्शन कह सकते हैं। साधना के दो अनिवार्य पथ हैं ज्ञान और भक्ति, जिस भक्त में दोनों का सम्यक समाहार मिलता है वह निश्चय ही बड़ा होता है इस दृष्टि से कबीर बड़े हैं। उनकी कविता प्रज्ञा के विकास के साथ हृदय का प्रसार करती है। उद्दाम प्रेम के क्षणों में स्त्री को आधार बनाकर उन्होंने अपनी संवेदनाओं को नई रेख दी है। उनकी कविताओं की सार्थकता इस बात में है कि ये कविताएँ मनुष्य को अहंकार के तिरोहण का मार्ग दिखाती हैं जिसकी अनदेखी नहीं हो सकती। सभी प्रकार के द्वंद्वों, विषमताओं से मनुष्य को निकालकर स्वस्थ धरातल पर खड़ा करने का प्रयास उनकी कविता में है जहाँ किसी के लिए भी दुर्भावना नहीं है। इस संदर्भ में डॉ. रामचंद्र तिवारी ने सही कहा है कि– "कबीर की भक्ति यदि उच्चतम आध्यात्मिक स्थिति में भक्त को द्वन्द्वातीत मनोभूमि में ले जाकर हरि रूप बना देती है तो सामान्य व्यावहारिक क्षेत्र में उसे एक सहज नैतिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा भी देती है। कबीर की दृष्टि में भक्त को अहंकार रहित और सांसारिक विषयों से उदासीन होना चाहिए। उसे बाह्याडंबर पर ध्यान नहीं देना